राज्य अध्याय 47

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता प्राप्त करने और उसकी आवाज़ सुनने के लिए उसके मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना करें।*** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने से सम्बंधित इस पाठ को प्रभु के हांथों में सौंपे।

2	**साझा करें** (20 मिनट) ***[शांत समय]*** **होशे 2, योएल 2, आमोस 5 और योना 1**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें (या*** अपने नोट्स से ***पढ़ें)*** कि अपने दिये गये अनुच्छेद (होशे 2, योएल 2, आमोस 5, और योना 1) से शान्त समय में क्या सीखा। अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	**स्मरण करें** (5 मिनट) ***[रोमियों में प्रमुख वचन]*** **(20) रोमियों 16:17**

दो-दो करके ***पुनरावलोकन करें।***

(20) रोमियों 16:17. अब हे भाइयो, मैं तुम से विनती करता हूँ, कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत, जो तुम ने पाई है, फूट डालने और ठोकर खिलाने का कारन होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो और उनसे दूर रहो।

4	**शिक्षा देना** (85 मिनट) ***[यीशु के दृष्टान्त]*** **भेड़ और बकरियां**

मत्ती 25:31-46 में भेड़ों और बकरियों का दृष्टान्त
परमेश्वर के राज्य में न्याय
के बारे में दृष्टान्त है

“एक दृष्टान्त” स्वर्गीय अर्थ को समझाने के लिए एक ज़मीनी या भौतिक कहानी होती है। यह कहानी जीवन से जुड़ी हुई सच्ची घटना या काल्पनिक कहानी होती है, जिससे एक आत्मिक सच्चाई को सिखाया जाता है। यीशु ने सार्वजनिक स्थलों और रोज़ मर्रा की ज़िन्दगी से जुड़ी चीज़ों व घटनाओं का इस्तेमाल परमेश्वर के राज्य के भेदों को प्रगट करने और लोगों को उनकी असलीयत दिखाने और उन्हें अपने जीवन में परिवर्तन की आवश्यकता बताने के लिए किया। हम इस दृष्टान्त का अध्ययन करने वाले छः निर्देशों के आधार पर करेगें (नियमावली 9, परिशिष्ट 1 को देखें)।

पढ़ें मत्ती 25:31-46.

---

1. दृष्टान्त की वास्तविक कहानी को समझें।

परिचय। दृष्टान्त को आलंकारिक भाषा में बताया गया है और दृष्टान्त का आत्मिक अर्थ उसी पर आधारित है। इसलिए हम पहले शब्दों और कहानी की पृष्ठभूमि के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन करेंगे।
चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?
ध्यान दें।

यह वास्तव में एक *दृष्टांत* नहीं है, हालांकि इसमें *एक दृष्टान्त के तत्व* शामिल हैं। उदाहरण के लिए, भेड़ और बकरियां अक्सर दिन के दौरान आपस में मिलती हैं जब वे चरती हैं। लेकिन शाम को, जब चरवाहा अपनी भेड़ों को बुलाता है, तो बकरियां जवाब नहीं देती हैं! भेड़ें अपने चरवाहे की आवाज़ सुनती हैं और उसके चारों ओर इकट्ठा होती हैं (यूहन्ना 10:1-6)। लेकिन बकरियों को एक साथ चलाना पड़ता है।

मत्ती 25:31-46 अंतिम न्याय के दिन का एक नाटकीय वर्णन है, जो इस प्रतीकवाद का उपयोग करता है।

---

2. वर्तमान संदर्भ की जांच करें और दृष्टान्त के तत्वों को निर्धारित करें।

परिचय। दृष्टांत की 'कहानी' के संदर्भ में दृष्टांत का "स्थान" और "स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग" शामिल हो सकते हैं। दृष्टांत का स्थान दृष्टांत को बताने के अवसर को बता सकता है, या दृष्टांत को बताने के समय *परिस्थितियों* का वर्णन कर सकता है। स्थान आमतौर पर दृष्टांत की कहानी से पहले पाया जाता है और स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग आमतौर पर दृष्टांत की कहानी के बाद पाया जाता है।
खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत का स्थान, कहानी और स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग क्या है?
ध्यान दें।

(1) दृष्टान्त की परिस्थिति मत्ती अध्याय 24 और 25 में लिखी हुई है।

यह अंतिम न्याय के दिन का वर्णन करता है। इन दो अध्यायों में अंतिम बातों (परलोक सिद्धांन्त) पर यीशु के उपदेश शामिल हैं। इन दो अध्यायों का संदेश यह है कि जब मसीह न्याय करेगा और प्रतिफल देगा, तो मसीह की वापसी के मद्देनजर मसीहियों को जागते रहना चाहिए। इन अध्यायों की भविष्यवाणियों में निकट भविष्य में होने वाली घटनाओं और अंत समय में होने वाली घटनाओं दोनों का संदर्भ है।

मत्ती 24 में, यरूशलेम पर आने वाले निर्णय (रोमियों द्वारा 70 ईस्वी) और पूरी दुनिया के अंतिम निर्णय के दिन (मसीह के दूसरे आगमन पर) को अंतिम बातों पर एक महान शिक्षण बनाने के लिए एक साथ मिलाया गया हैं (अर्थात्, यरूशलेम के लिए आखिरी बातें और इस दुनिया के लिए आखिरी बातें)! यरुशलेम की तरफ बढ़ती हुई तबाही एक प्रकार के रूप में कार्य करती है, जो कि एक उदाहरण के रूप में है, जो अंतिम समय में क्लेश का चित्रण करता है।

मत्ती 25 में, दस कुंवारी कन्याओं का दृष्टांत यह सिखाता है कि पूरे दिन की सतर्कता और तैयारी प्रत्येक मसीही के लिए आवश्यक होती है, क्योंकि मसीह का दूसरा आगमन अज्ञात है। तोड़ो का दृष्टांत सिखाता है कि अंतिम न्याय के दिन से पहले परमेश्वर द्वारा दी गयी प्रत्येक क्षमताओं और अवसरों का उपयोग करने में विश्वास और परिश्रम करना आवश्यक है। इस बिंदु पर, यीशु ने नाटकीय और अक्सर प्रतीकात्मक भाषा में अंतिम न्याय के दिन का वर्णन किया।

(2) कहानी अंतिम न्याय के दिन के विवरण के रूप में है।

(3) स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग एक ही रूप में है।

---

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहिचानें।

परिचय। यीशु का इरादा दृष्टान्त की कहानी के हर विवरण में आत्मिक महत्व रखने का नहीं था। दृष्टांत रूपक नहीं हैं। प्रासंगिक विवरण दृष्टांत की कहानी में वे विवरण हैं जो केंद्रीय बिंदु या मुख्य विषय या दृष्टांत के पाठ को सुदृढ़ करते हैं। इसलिए, हमें दृष्टांत की कहानी के प्रत्येक विवरण के लिए स्वतंत्र आत्मिक महत्व का वर्णन नहीं करना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत की कहानी में कौन सा विवरण वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक है?
ध्यान दें।

न्याय का सिंहासन। यह प्रासंगिक है, क्योंकि यह सीधे यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर अंतिम न्याय के दिन से संबंधित है।

न्याय का सिंहासन हवा में है या पृथ्वी पर? जकर्याह 14:4 के आधार पर, कुछ मसीही धरती पर सिंहासन रखते हैं। हालाँकि, जकर्याह 14:1-5 एक सिंहासन की बात नहीं करता है! जकर्याह पुराने नियम में "यहोवा का एक दिन" पर आखिरी बातों का वर्णन करता है, यानी कि इस्राएल की भूमि में इस्राएल के लोगों के साथ होने वाली घटनाओं के संदर्भ में (तुलना करें) प्रकाशितवाक्य 20:8-9)।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में, परमेश्वर और मेम्ने का सिंहासन, यीशु मसीह, आमतौर पर ऊपरी क्षेत्रों में है (प्रकाशितवाक्य 4:1-2; 5:6; 20:11-12; तुलना करें मत्ती 19:28-29; 25:31)। न्याय का सिंहासन संभवत: हवा में खड़ा है जहां सच्चे मसीही यीशु मसीह से बादलों पर दूसरे आगमन पर उससे आनंद के साथ मिलने के लिए ,उसका स्वागत करने के लिए व उस पर अचंभित होने के लिए (2थिस्सलुनीकियों 1:10) "एक साथ लाये जाएंगे" या छीन लिए जायेंगे (ग्रीक:हरपाजो) (1थिस्सलुनीकियों 4:15-17; प्रकाशितवाक्य 12:5)।

बाइबल के किसी भी अधिकार के बिना कुछ मसीही सिखाते हैं कि तीन अलग-अलग अवसरों पर तीन अलग-अलग न्याय के सिंहासन को प्रतिष्ठित करना चाहिए:

- वे सोचते हैं कि "मसीह के न्याय का आसन" (2 कुरिन्थियों 5:10) केवल मसीहियों के विश्वास के निर्णय के लिए है – जिसे बादलों में उठाया जाना या "मसीह के पहले आगमन "(ग्रीक: परोसिए) के नाम से जाना जाता है, मसीह के तथाकथित दूसरे आगमन (ग्राइक: अपोकैलपिसिस) से 7 या 3.5 साल पहले। वे मानते हैं कि मसीह का न्याय आसन स्वर्ग में है।
- उन्हें लगता है कि "महिमा में मसीह का सिंहासन" (मत्ती 19:28; 25:31) तथाकथित उपस्थिति / प्रकाशितवाक्य या "मसीह के दूसरे आगमन" पर इस्राएल को छोड़कर सभी राष्ट्रों के न्याय के लिए है (ग्रीक: अपोकैलपिसिस) जिसकी मसीह पृथ्वी पर तथाकथित हज़ार वर्ष के राज्य की स्थापना करेगा। वे मानते हैं कि महिमा में मसीह का सिंहासन पृथ्वी पर खड़ा है (जकर्याह 14:4)।
- और वे सोचते हैं कि "एक बड़ा श्वेत सिंहासन" (प्रकाशितवाक्य 20:11) पृथ्वी पर मसीह के तथाकथित हज़ार वर्ष

के राज्य के अंत में सभी अविश्वासियों के न्याय के लिए है, (पिछले दो अंतिम न्याय के दूसरे के 1000 साल बाद)। वे मानते हैं कि महान सफेद सिंहासन भी स्वर्ग में है।

हालाँकि, ये तीन अलग-अलग नाम सभी एक और केवल मसीह के दूसरे आगमन के अंतिम न्याय के सिंहासन को संदर्भित करते हैं![14]

न्यायाधीश। यह प्रासंगिक है, क्योंकि वह सीधे मसीह के दूसरे आगमन पर अंतिम न्याय के दिन से संबंधित है।

ये न्यायाधीश कौन है? क्या वह परमेश्वर पिता है या यीशु मसीह है?
निर्गामी ईश्वरीय कार्य जैसे की निर्माण, प्रदान करना, उद्धार और न्याय में पवित्र त्रिमूर्ति (त्रिएक ईश्वर) सहयोग करते हैं। फिर भी, वर्तमान पद्यांश में यह स्पष्ट है कि न्याय करने का सम्मान यीशु मसीह को मध्यस्थ के रूप में प्रदान किया जाता है, उनके निपुण मध्यस्थ कार्य के लिए एक पुरस्कार के रूप में (दानिय्येल 7:13-14; मत्ती 13:41; 16:27; 26:64; 28:18; यूहन्ना 5:22-23, 27-29; फिलिप्पियों 2:9-10)। यीशु को "राजा" (यूहन्ना 1:36; प्रकाशितवाक्य 19:16) कहा जाता है और उन्हें स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार दिया गया है (मत्ती 11:27; 28:18; यूहन्ना 3:35; 13:3; इफिसियों 1:22)।

प्रकाशितवाक्य 20:11 में, जो एक बड़े श्वेत सिंहासन पर बैठा हुआ है, वह यीशु मसीह है (मत्ती 19: 28; यूहन्ना 5:22; प्रकाशितवाक्य 5:6), जो अंतिम फसल काटने के लिए आता है (प्रकाशितवाक्य 14:14)। वर्तमान पृथ्वी और आकाश (सितारों का) उनकी उपस्थिति से प्रकाशित होता है (प्रकाशितवाक्य 6:14; 20:11)। इसका मतलब यह नहीं है कि अंतिम न्याय में सम्पूर्ण जगत का "विनाश" किया गया है, बल्कि यह है कि इसका पूरी तरह से "नवीनीकरण" (ग्रीक: अपोकैलपिसिस) (प्रेरितों 3:21), "छुटकारा" (ग्रीक: एलियूथेरो) (रोमियों 8: 21) या "नया" किया जाता है (ग्रीक: कइना पोइयो) (प्रकाशितवाक्य 21: 1,5; तुलना करें 2 पतरस 3:10)।

स्वर्गदूत। वे प्रासंगिक हैं, क्योंकि वे सीधे मसीह के दूसरे आगमन पर अंतिम न्याय के दिन से संबंधित हैं। स्वर्गदूतों के कार्य क्या हैं?

वे *अंत समय* में यीशु मसीह से जुड़े हैं। दूसरे आगमन पर, वे मसीह की महिमान्वित श्रंखला बनाएंगे और उनके पास करने के लिए दो महत्वपूर्ण कार्य होंगे:

- मृत्यु से पुनरूत्थान (1 कुरिन्थियों 15:42-49) और पृथ्वी पर जीवित लोगों के परिवर्तन के बाद (1कुरिन्थियों 15:50-52), स्वर्गदूत परमेश्वर के चुने हुए लोगों को पृथ्वी पर हर जगह से इकट्ठा करेंगे (भेड़)। सभी परमेश्वर के चुने हुए, अर्थात् पुराने नियम की अवधि के सभी सच्चे विश्वासियों और नए नियम की अवधि से सभी सच्चे मसीही "उनके साथ बादलों पर जायेंगे कि हवा में प्रभु से मिले"[15] (मत्ती 24:31, 40अ, 41अ; 1थिस्सलुनीकियों 4:15-17) उसका स्वागत करें, उस पर अचंभा करें और उसे महिमा दें (2 थिस्सलुनीकियों 1:10)। ये विश्वासी वही हैं जो मसीह से मिलने के लिए तुरंत "उठा लिए जायेंगे" (स्वर्गदूतों के साथ) (ग्रीक: पैरालम्बनो) (मत्ती 24:31,40अ, 41अ)।

[14] जिस प्रकार से यीशु मसीह के विभिन्न नाम भिन्न मसीह की और संकेत नहीं करते। ठीक उसी प्रकार से परमेश्वर के लोगों अर्थात कलीसिया के भिन्न नाम बहुत से कलीसियाओं को नहीं दर्शाते। नियमावली 3, परिशिष्ट 12 को देखें।

[15] ग्रीक: hama sun autois harpagmésometha en nefalais eis apantésin (मत्ती 25:6, प्रेरितों 28:15) tou kuriou eis aera.

- बाद में उसी अंतिम न्याय के दिन स्वर्गदूत वो सब कुछ परमेश्वर के राज्य से बाहर कर देंगे जो पाप का कारण बनते हैं और जो बुराई (बकरियां) मत्ती 13:41) करते हैं, और उन्हें अंतिम न्याय के लिए हवा में मसीह के न्याय के सिंहासन के सामने ले जाया जायगा। वहाँ यीशु मसीह इन स्वर्गदूतों के साथ मिलकर उन्हें अपने बाएँ हाथ पर एक अलग जगह सौंपेंगे (मत्ती 13:49; 25; 31-33; यहूदा 1:14-15)। ये अविश्वासी वही हैं जो पहले स्वर्गदूतों द्वारा पीछे छोड दिए जाते हैं (मत्ती 24:40ब, 41ब), फिर न्याय के आसन के सामने लाये जाते हैं और न्याय के बाद आत्मा और शरीर को नरक में फेंक दिया जाता है (मत्ती 13:42, 50; 2 थिस्सलुनीकियों 1:7-9; प्रकाशितवाक्य 14:17-20)।

राष्ट्र। न्याय के सिंहासन के सामने एकत्र होने वाले राष्ट्र प्रासंगिक हैं, क्योंकि वे सीधे मसीह के दूसरे आगमन पर अंतिम न्याय के दिन से संबंधित हैं। न्याय के सिंहासन के सामने इकट्ठा होने वाले ये *राष्ट्र* कौन हैं?

कुछ मसीही मानते हैं कि मत्ती 25:31-46 में वर्णित न्याय प्रकाशितवाक्य 20:11-15 में वर्णित न्याय से अलग है। वे कहते हैं कि मत्ती 25 केवल अन्यजातियों द्वारा यहूदी राष्ट्रों के साथ किये गए व्यवहार के अनुसार अन्यजातियों के राष्ट्र के न्याय का वर्णन करता है, और यह कि प्रकाशितवाक्य 20 में हजार साल बाद एक और न्याय का वर्णन होता है, अर्थात् केवल अविश्वासियों और ईश्वरविहीन लोगों का न्याय। ये लोग सभी गैर-यहूदी होंगे, क्योंकि रोमियों 11:26 के आधार पर यह मान लिया जाता है कि सभी यहूदी बच जाएंगे। लेकिन रोमियों 10:12 पहले से ही बहुत स्पष्ट है कि मसीह के पहले आगमन के बाद से यहूदी और गैर-यहूदी के बीच कोई अंतर नहीं है!

मत्ती 25, 2 कुरिन्थियों 5:10 और प्रकाशितवाक्य 20 में वर्णित न्याय एक और एक ही अंतिम न्याय का दिन है। मत्ती 25:31-46 में वर्णित न्याय उतना ही सार्वभौमिक और अंतिम है जितना कि प्रकाशितवाक्य 20:11-15 में वर्णित न्याय! मत्ती का कहना है कि "सभी राष्ट्र" और वह अलग से यहूदी राष्ट्र का उल्लेख नहीं करते हैं। और प्रकाशितवाक्य कहते हैं, "मृत, महान और छोटे" न्याय के सिंहासन से सामने खड़े थे। लेखक इस सामान्य पुनरुत्थान और अंतिम न्याय से किसी को भी बाहर नहीं करते हैं! इसके अलावा, मत्ती 19:28 में विशेष रूप से उल्लेख किया गया है कि "सभी चीजों के नवीनीकरण पर" (ग्रीक: पॉलेजनेसिआ) (दूसरे आगमन पर) बारह प्रेरित "इस्राएल के बारह गोत्रों" का न्याय करेंगे (इस प्रकार: सभी जन्मे फिर से यहूदी या यहूदियों और गैर-यहूदियों के अर्थ में जो यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं!)। वे उनका उसी तरह से न्याय करेंगे जिस तरह "महिमा और सम्मान से उन पर शासन" करते हैं। (ग्रीक: कृणो) (1कुरिन्थियों 6:2-3 की तुलना में)।

दानिय्येल 12:2, यूहन्ना 5:28-29 और प्रेरितों 24:15 सिखाते हैं कि सभी अधर्मी लोग और पृथ्वी पर सभी धर्मी लोग फिर से जीवित हो जाएँगे और एक ही समय में एक साथ मानव इतिहास के अंतिम दिन पर वर्तमान पृथ्वी पर उनका न्याय किया जायगा। बाइबल मसीह के दूसरे आगमन की शिक्षा देती है, मृतकों में से एक पुनरुत्थान और उन सभी लोगों के अंतिम न्याय का एक दिन जो कभी जीवित रहें हैं! सिंहासन से पहले जो राष्ट्र एकत्रित होते हैं, वे सभी ऐसे लोग होते हैं जो कभी भी अपनी राष्ट्रीयता की परवाह किए बिना रहते हैं!

भेड़ और बकरियां। वे प्रासंगिक हैं, क्योंकि वे सीधे मसीह के दूसरे आगमन पर अंतिम न्याय के दिन से संबंधित हैं। भेड़ और बकरियाँ कौन हैं? बिंदु 5 देखें।

"भेड़ और बकरियाँ" पुराने नियम के प्रतीक हैं। "भेड़" उन लोगों का प्रतीक है जो यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं और उसका

अनुसरण करते हैं। वे नम्र और आज्ञाकारी हैं (भजन संहिता 79:13; यूहन्ना 10:3-4,27)। दूसरी ओर "बकरियाँ" उन लोगों का प्रतीक है जो जुझारू, बेलगाम और विनाशकारी हैं (यहेजकेल 34:17-19; दानिय्येल 8:5,7,21)।

यीशु के भाइयों में से सबसे छोटा। अंतिम न्याय के दिन, जिस तरह से प्रत्येक व्यक्ति ने "यीशु के छोटे से छोटे भाइयों में से एक के साथ कैसा व्यवहार किया है", यह दिखाएगा कि वह एक भेड़ या एक बकरी है। इब्रानियों 2:11-12 सिखाता है कि "यीशु और यीशु का एक भाई" "एक से आये हैं" (एक ही परिवार, ऊपर से पैदा हुआ) "और मत्ती 12:50 सिखाता है कि" यीशु का एक भाई परमेश्वर की इच्छा के अनुसार करता है "(तुलना करें। मत्ती 28: 10)। मत्ती 25 मसीहियों और गैर-मसीहियों (धर्मी और अधर्मी) के बीच अंतर करता है न कि यहूदियों और गैर-यहूदियों के बीच! "यीशु का छोटे से छोटा भाई" उन मसीहियों को प्रदर्शित करते हैं जिन्हें मदद की ज़रूरत है, जैसे भूखे मसीही, अकेले मसीही, गरीब मसीही, बीमार मसीही और कैद (सताए हुए) मसीही। संक्षेप में, वे ज़रुरतमंद मसीही हैं।

भेड़ धार्मिक लोगों को दर्शाती है। यह प्रासंगिक है, क्योंकि यह यीशु के अपने दूसरे आगमन पर अंतिम न्याय पर सीधा ऐलान है। भेड़ों को "धार्मिक" क्यों कहा जाता है?

भेड़ को "धार्मिक" कहा जाता है, क्योंकि न केवल यीशु मसीह में उनके विश्वास के द्वारा धार्मिकता और यीशु मसीह की पवित्रता को उन पर आरोपित किया जाता है (उन्हें समझा जाता है) और उन्हें धार्मिक रूप से माना जाता है, बल्कि यह भी कि वह धर्मी जीवन जीते हैं। यह धार्मिकता के अध्यारोपण, धार्मिकता प्रगट करने और धार्मिकता में जीने का सवाल है! जिन शब्दों के साथ यीशु ने धर्मी लोगों का स्वागत किया है, वे दिखाते हैं कि उन्होंने अपने दैनिक जीवन को ईमानदारी से व्यतीत किया है, दूसरों के प्रति प्रेम, दया और दया दिखाते हुए, यहां तक कि मसीहियों के बीच भी। ये लोग यीशु मसीह के चेले साबित हुए, महान आश्चर्यकर्मों और महान उपलब्धियों (मत्ती 7:21-23) के कारण नहीं, बल्कि जीवन की साधारण छोटी चीज़ों के कारण: भोजन, वस्त्र और ध्यान (मत्ती 10:40-42; 25:35-36)। मसीह के इन ईमानदार अनुयायियों को धन्य कहा जाता है। उन्होंने अपनी सेवा को सहजता से, विनम्रतापूर्वक, खुशी और कृतज्ञता के साथ प्रदान किया था जिसे वे बाद में पूरी तरह से भूल गए थे!

बकरियाँ अधर्मी लोगों का प्रतिनिधित्व करती हैं। यह प्रासंगिक है, क्योंकि यह यीशु के अपने दूसरे आगमन पर अंतिम न्याय पर सीधा ऐलान है। बकरियों को "अधर्मी" क्यों कहा जाता है?

बकरियों को अधर्मी कहा जाता है, न केवल उनके अविश्वास के कारण उन्हें उचित नहीं ठहराया गया है, बल्कि इसलिए भी कि वे धर्मी रूप से जीने में असफल रहे थे। जिन शब्दों के साथ यीशु अधर्म की निंदा करते हैं वे विशेष रूप से उपेक्षा के उनके पापों के लिए निंदा करते हैं! इस पद्यांश में एक भी दुष्ट काम का उल्लेख नहीं किया गया है, जैसे कि मूर्ति पूजा, हत्या, व्यभिचार, चोरी, आदि लेकिन केवल उपेक्षा का पाप। उन्होंने दूसरों को प्रेम, दया और कृपा नहीं दिखाई, विशेष रूप से मसीहियों के बीच, विशेष रूप से छोटे लोगों को भी नहीं। यीशु की घोषणा पर आश्चर्य की उनकी अभिव्यक्ति से पता चलता है कि उन्होंने स्वयं को यह सोचने के लिए उकसाया था कि वे अधर्मी नहीं थे, लेकिन मानवीय रूप से काफी "अच्छे" लोग दिखते थे।

उद्धार का आधार अनुग्रह है। यह बहुत ही प्रासंगिक है, क्योंकि यीशु सीधे अपने दूसरे आगमन के दिन को अंतिम न्याय के संबंध में सिखाता है। उद्धार का एकमात्र आधार क्या है?

मत्ती 25 में, धर्मी कर्मों के पहले मत्ती 25 में उल्लेख किया गया है, यीशु इस बात पर जोर देते हैं कि उनके उद्धार का आधार, और इसलिए उनके सभी बाद के अच्छे कर्मों का आधार, यह तथ्य है कि उन्हें अनंतकाल से परमेश्वर द्वारा परमेश्वर के राज्य को प्राप्त करने के लिए चुना गया है। अपने अंतिम चरण में) (मत्ती 25:34)। चाहे परमेश्वर ने "जगत की उत्पत्ति से पहले उन्हें चुन लिया" (इफ़िसियों 1:4) या "जो जगत के आदि से तुम्हारे लिए तैयार किया गया है।" (मत्ती 25 :34) इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि नतीजा वही है! धर्मी लोगों के अच्छे कर्म नहीं, बल्कि परमेश्वर की दया और कृपा उनके उद्धार की नींव है। उनके अच्छे कार्य केवल फल हैं, अनुग्रह का मूल नहीं! इस प्रकार, सारी महिमा केवल परमेश्वर को दी जानी चाहिए!

एक पेड़ अनुग्रह, विश्वास और अच्छे कार्यों के बीच के संबंध को चित्रित कर सकता है। "जड़" परमेश्वर की कृपा का प्रतिनिधित्व करती है, "तना" विश्वास का प्रतिनिधित्व करता है और "फल" अच्छे काम को दर्शाता है (तुलना करें। इफिसियों 2:8-10)।

उद्धार विश्वास का मापदंड है । "जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।" (यूहन्ना 3:36) "परमेश्वर ने आदि से तुम्हें चुन लिया कि आत्मा के द्वारा पवित्र बनकर, और सत्य की प्रतीति करके उद्धार पाओ, जिस के लिए उसने तुम्हें हमारे सुसमाचार के द्वारा बुलाया, कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा को प्राप्त करो।" (2 थिस्सलुनीकियों 2:13-14). उद्धार का मानक क्या होगा? उद्धार का मानक यीशु मसीह में विश्वास होगा। सभी लोगों को उनके यीशु मसीह में विश्वास या उसकी अस्वीकृति के लिए आंका जाएगा।

न्याय का मापदंड कार्य है। यह प्रासंगिक है, क्योंकि यीशु का वचन 34 में सीधा यही तात्पर्य है। "परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का, चाहे वे भली हों या बुरे, न्याय करेगा।" (सभोपदेशक 12:14)। "वह हर एक को उसके कामों के अनुसार बदल देगी:" (रोमियों 2:6)। "क्योंकि तुम जानते हो कि जो कोई भी अच्छा होगा, चाहे दास हो चाहे स्वतंत्र, प्रभु से वैसा ही मिलेगा" (इफिसियों 6:8)।

वास्तविक विश्वास या अविश्वास के साक्ष्य में उस तरह से शामिल होगा जिस तरह से लोगों ने "मसीह के छोटे से छोटे भाइयों" के साथ व्यवहार किया है, अर्थात्, जिस तरह से उन्होंने अन्य मसीहियों के साथ व्यवहार किया है (मत्ती 25:40,45)। विश्वासियों के अच्छे काम, चाहे कई हों या कुछ, उनके वास्तविक विश्वास का प्रमाण होंगे। अविश्वासियों की उपेक्षा के पाप, चाहे असंख्य हों या छिटपुट, उनके अविश्वास के प्रमाण होंगे। अंतिम न्याय के दिन विश्वासियों के अच्छे काम (उनके विश्वास के सबूत के रूप में) या अविश्वासियों की उपेक्षा (उनके अविश्वास के सबूत के रूप में) सार्वजनिक रूप से घोषित किए जाएंगे। अंतिम न्याय के मानक लोगों के काम होंगे।

उद्धार के मुद्दों में व्यवस्था केवल "दोषी" और "खोये हुए" (1तीमुथियुस 1:8-11) के रूप में हर व्यक्ति की निंदा कर सकती है। लेकिन अंतिम न्याय (मुक्ति या निंदा का मुद्दा नहीं) के मामले में व्यवस्था माप या मानक के रूप में कार्य करती है जिसके द्वारा विश्वासियों को पुरस्कृत किया जाएगा और अविश्वासियों और दुष्ट लोगों को दंडित किया जाएगा। उद्धार का मुद्दा एक मसीही द्वारा यीशु मसीह के संबंध से निर्धारित होता है जिस पल वह मसीही बन जाता है। विश्वासियों को बचाया जाता है, लेकिन अविश्वासियों की निंदा (बर्बादी) होती रहती है। यह उनके मसीही जीवन की शुरुआत में निर्धारित किया गया है। लेकिन निर्णय का मुद्दा मसीही के अपने जीवन के दौरान मसीही के कार्यों से निर्धारित होता है। यह इतिहास के अंत में निर्धारित होता है। धर्मी जीवित को पुरस्कृत किया जाएगा, लेकिन अधर्मी जीवित को दंडित किया जाएगा। धर्मी लोगों

(मसीहियों) को उनके चुनाव के आधार पर बचाया जाएगा, जो उनके बुलावे, विश्वास द्वारा न्यायसंगतता और जीवन के पवित्रकरण (अच्छे कार्यों) के द्वारा स्पष्ट किया जाता है। अधर्मी लोगो (गैर-मसीही) की केवल अविश्वास, अधर्म और धार्मिकता की कमी के आधार पर निंदा की जायगी।

अधर्मी अनन्तकाल तक दण्ड भोगेंगे। यह प्रासंगिक है, क्योंकि यीशु इसे सीधे सिखाते हैं। अधर्मी की सजा क्या होगी?

बकरियां, अर्थात् अधर्मी, को नरक में फेंक दिया जाएगा। वहाँ वे हमेशा के लिए परमेश्वर की प्यार और परवाह करने वाली उपस्थिति से हमेशा के लिए अलग हो जाएंगे (दानिय्येल 12:2; मत्ती 25:46; 2 थिस्सलुनीकियों 1:8-9) । वे चिरस्थायी पीड़ा को भुगतेंगे (यशायाह 66:24; मरकुस 9:48; प्रकाशितवाक्य 14:27; 18:2.2-23)।

धर्मी अनन्त जीवन में जायेंगे। यह प्रासंगिक है, क्योंकि यीशु इसे सीधे तौर पर सिखाते हैं। धर्मियों की विरासत क्या होगी? भेड़, अर्थात् धर्मी, वे लोग जो विश्वास के द्वारा अनुग्रह से बच जाते हैं, संसार की रचना के बाद से उनके लिए तैयार किए गए राज्य को विरासत में प्राप्त करेंगे। इस संदर्भ में राज्य परमेश्वर के राज्य के रूप में अपने अंतिम रूप (रूप या चरण) में नए स्वर्ग और नई पृथ्वी के रूप में है। धर्मी लोगों को परमेश्वर के राज्य की विरासत अर्जित करने की आवश्यकता नहीं है और न ही वे जो कुछ भी कर रहे हैं, उसके द्वारा परमेश्वर के राज्य को विरासत में प्राप्त कर सकते हैं। वे परमेश्वर के प्रभुत्व और अनुग्रहपूर्ण उपहार के रूप में परमेश्वर के राज्य को प्राप्त करते हैं (यूहन्ना 3:3; रोमियों 8:17; कुलुस्सियों 1:13)। वे राज्य को एक स्थिर और ना छीने जा सकने वाले कब्जे के रूप में प्राप्त करेंगे (इब्रानियों 12:28)। सच्चे मसीही, जो पहले से ही परमेश्वर के राज्य के उत्तराधिकारी थे (मत्ती 5:3,10,19; यूहन्ना 3:3), फिर वास्तव में परमेश्वर के राज्य के वारिस बन जाएंगे (मत्ती 25:34) आत्मा और शरीर के उद्धार के लिए और सम्पूर्ण जगत के नवीकरण के संबंध में सभी वादे उनके बाद उत्तरोत्तर और अनंतकाल के लिए पूरे होंगे! वे परमेश्वर के राज्य के अंतिम चरण में नए स्वर्ग और नई पृथ्वी के रूप में हमेशा का जीवन प्राप्त करेंगे। वे कभी भी भूखे या प्यासे नहीं रहेंगे (प्रकाशितवाक्य 7:16)। वे फिर कभी मृत्यु या शोक या रोने या दर्द का अनुभव नहीं करेंगे, क्योंकि इस वर्तमान पृथ्वी पर चीजों के पुराने आदेश मर चुके है। नए स्वर्ग और नई पृथ्वी पर परमेश्वर सब कुछ नया कर देगा (प्रकाशितवाक्य 21:3-5)।

---

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहचानें।

परिचय। दृष्टांत का मुख्य संदेश (केंद्रीय विषय) या तो स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग में या कहानी से ही मिला है। जिस तरह से यीशु मसीह ने स्वयं दृष्टांतों को समझाया या लागू किया है, हम जानते हैं कि हमें दृष्टान्तों की व्याख्या कैसे करनी चाहिए। एक दृष्टांत में सामान्य रूप से केवल एक मुख्य पाठ होता है, एक केंद्रीय बिंदु बनाने के लिए। इसलिए, हमें कहानी के प्रत्येक विवरण में आत्मिक सच्चाई खोजने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, बल्कि एक मुख्य पाठ की तलाश करनी चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 25: 31-46 में भेड़ और बकरियों के दृष्टांत परमेश्वर के राज्य में न्याय के बारे में सिखाते हैं।

दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "मसीहियों और गैर-मसीहियों को यीशु के द्वारा अंतिम न्याय के दिन उसके दूसरे आगमन पर यीशु मसीह से उनके सम्बन्ध पर मसीह और उनके सच्चे अनुयायियों के प्रति उनके आचरण के आधार पर आंका जाएगा।"

अंतिम न्याय का दिन परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य (भेड़) के सच्चे लोग अंतिम न्याय के दिन में विश्वास करते हैं। वे अंतिम न्याय के दिन से पहले पृथ्वी पर मसीह के अनुयाइयों से जिस तरह व्यवहार करते हैं उससे वे यह दिखते हैं की उनका मसीह में वास्तविक विश्वास है। वे निश्चित रूप से नए स्वर्ग और नई पृथ्वी के रूप में अपने अंतिम स्वरूप में परमेश्वर के राज्य को प्राप्त करेंगे।

यह अंतिम न्याय का दिन चार कारणों से आवश्यक है:

- सभी लोग जो कभी पृथ्वी पर रहे थे, उन्हें उनके कामों के संबंध में आंका जाना चाहिए (रोमियों 2: 6-11; 1 कुरिन्थियों 3:11-15; 2 कुरिन्थियों 5:10)।
- उसके उद्धार और न्याय में परमेश्वर की धार्मिकता को सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित किया जाना चाहिए, ताकि परमेश्वर को मसीह में महिमा दी जा सके (रोमियों 3:21-24; 11:36; 2थिस्सलुनीकियों 1:10; प्रकाशितवाक्य 15:3-4)।
- मसीह की धार्मिकता की सार्वजनिक रूप से उसके उद्धार मे पुष्टि होनी चाहिए। सभी लोगों को खुले हृदय से स्वीकार करना चाहिए कि यीशु मसीह कोई अपराधी नहीं था, बल्कि उद्धारकर्ता और प्रभु था। सभी लोगों को अपनी पूरी महिमा के साथ अपने लोगों के साथ उनके दूसरे आगमन पर उन्हें पूर्ण रूप से देखना चाहिए (प्रकाशितवाक्य 1:7; फिलिप्पियों 2:9-10: 9-10; 1थिस्सलुनीकियों 4:14-17; 2थिस्सलुनीकियों 1:10) ।
- गैर-मसीहियों द्वारा मसीहियों के अधर्मी उत्पीड़न को सभी लोगों द्वारा पूर्ण प्रकाश में देखा जाना चाहिए (प्रकाशितवाक्य 20:12-13) ।

---

5. बाइबल में समानांतर और विपरीत पद्यांशों के साथ दृष्टांत की तुलना करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान हैं और उनकी तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सभी दृष्टांतों में सच्चाई के समानांतर या विपरीत सत्य है जो बाइबल के अन्य अंशों में पढ़ाया गया है। सबसे महत्वपूर्ण प्रति-सन्दर्भ को खोजने की कोशिश करें जो हमें दृष्टांत की व्याख्या करने में मदद करते हैं। हमेशा बाइबल की प्रत्यक्ष स्पष्ट शिक्षा के साथ दृष्टान्त की व्याख्या की जाँच करें।

खोजें और चर्चा करें। अंतिम न्याय के दिन के बारे में बाइबल क्या सिखाती है?

पढ़ें। यूहन्ना 5:28-29; प्रेरितों 1:11; 24:15; 2 थिस्सलुनीकियों 1:5-10; प्रकाशितवाक्य 20:11-15

खोजें और चर्चा करें। अंतिम न्याय कितने होंगे?

ध्यान दें। दो अलग-अलग विचार हैं। पहला दृश्य *बाइबल* का नहीं है। दूसरा दृश्य *बाइबल* का है।

(1) अंतिम निर्णय दिवस - एक गैर-बाइबल दृष्टिकोण।

व्यवस्थावाद सिखाता है कि अंतिम न्याय के कुछ दिन होते हैं और ये उनके विचार से मेल खाते हैं कि मसीह के दो दूसरे आगमन (3½ या 7 वर्ष के अंतर से) और मृतकों में से दो अलग-अलग पुनरुत्थान (कम से कम 1000 साल के अंतर से) हैं।

- **मसीहियों के लिए पहला अंतिम न्याय का दिन।** 2 कुरिन्थियों 5:10 के आधार पर, वे सिखाते हैं कि मसीह की पहली वापसी के साथ केवल मेल खाने वाले विश्वासियों का पहला अंतिम निर्णय होगा (तथाकथित बादलों पर उठाया जाना या मसीह के आना) (ग्रीक: परोसिआ) । मानक यीशु मसीह में विश्वास होगा। यह धारणा गलत है!
- **राष्ट्रों के लिए दूसरा अंतिम न्याय का दिन।** पुराने नियम के आधार पर योएल 3: 2,12, मत्ती 19:28; मत्ती 25: 31-46, वे सिखाते हैं कि मसीह की दूसरी वापसी के साथ समकालीन अन्यजातियों के राष्ट्रों का दूसरा अंतिम

न्याय होगा (मसीह का तथाकथित प्रकाशितवाक्य)(ग्रीक: अपोकलोप्सिस) जो साधारणतः तथाकथित पहली वापसी के 7 या 3½ वर्ष या तुरंत बाद होगा। यहूदियों को इस फैसले में शामिल नहीं किया गया है और फैसले की कसौटी पर यीशु मसीह में अन्यजातियों का विश्वास नहीं होगा, लेकिन जिस तरह से इन अन्यजातियों ने यहूदियों के साथ व्यवहार किया है, जिसे ये लोग यीशु के "भाइयों" के रूप में मानते हैं (तुलना करें मत्ती 25:40)। यह धारणा गलत है!

- **गैर-मसीहियों के लिए तीसरा अंतिम न्याय का दिन।** मत्ती 19:28 के आधार पर वे सिखाते हैं कि मसीह के तथाकथित सहस्राब्दी साम्राज्य की शुरुआत में केवल यहूदियों का तीसरा अंतिम निर्णय होगा। बहुतों का मानना है कि सभी यहूदियों को बचाया जाएगा (रोमियों की व्याख्या 11:26)। यह धारणा गलत है!

व्यवस्थावाद बाइबल का नहीं है![16]

(2) अंतिम न्याय का दिन - बाइबल का दृष्टिकोण।

हजार वर्ष की अवधि। बाइबल एक शाब्दिक सहस्राब्दी राज्य को नहीं सिखाता है(शांति के हजार साल के साम्राज्य), लेकिन मसीह के पहले आगमन और उनके दूसरे आगमन (प्रकाशितवाक्य 20:1-7) के बीच एक प्रतीकात्मक हजार वर्ष की अवधि है।[17] संख्या 1000 एक प्रतीकात्मक संख्या है। और जो कि बाइबल के पद्यांशों में 6 बार पायी जाती है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक एक प्रकाशन है जो प्रतीकों और संख्याओं का उपयोग करती है जिसे प्रतीकात्मक रूप से व्याख्या की जानी चाहिए (ग्रीक: सेमैनो) (प्रकाशितवाक्य 1: 1)! प्रतीकात्मक 1000 वर्ष (देखें भजन संहिता 90:4; 2 पतरस 3:8) समय की एक पूर्ण अवधि है (संख्या "10") जो त्रिगुण परमेश्वर द्वारा निर्धारित की गई है (संख्या "3": 10 x 10 x 10) और यह सभी पीढ़ियों पर फैला है (देखें निर्गमन 20:6; भजन संहिता 105:8) ।

प्रतीकात्मक 1000 साल की अवधि स्पष्ट रूप से मसीह के पहले आगमन पर शैतान को बांधे जाने के साथ शुरू हो जाती है (मत्ती 12: 28-30; मत्ती 28: 18; लूका 10:18-20; यूहन्ना 12: 31-32; रोमियों 16:20; इफिसियों 1; 20-22; कुलुस्सियों 1:13; कुलुस्सियों 2:15; इब्रानियों 2:14; 1 पतरस 3:22; 1 यूहन्ना 3:8; 1 यूहन्ना 5:18; प्रकाशितवाक्य 12:5-11; प्रकाशितवाक्य 20:1-3)।

इस प्रतीकात्मक 1000 साल की अवधि में, जब मसीही मर जाते हैं, *"वे एक बार और हमेशा के लिए जीवित रहते हैं"* (मसीह की उपस्थिति में), (एनआईवी के बजाय: वे जीवन में आए थे) (यूनानी: एज़ेसन <ज़ाओ) (एनोरिस्ट काल)।

प्रतीकात्मक 1000 वर्ष की अवधि स्पष्ट रूप से मसीह के दूसरे आगमन पर समाप्त हो जाती है (तुलना करें प्रकाशितवाक्य 11: 7-18) जहां निम्नलिखित कार्य होते हैं:

- **महाविपत्ति अंतिम युद्ध के साथ समाप्त होती है**, जब शैतान और उसके सभी मसीही-विरोधी सहयोगियों को बहुत पीटा जाता है और हमेशा के लिए पृथ्वी से हटा दिया जाता है (मत्ती 24:21-24; 2 थिस्सलुनीकियों 2:1-12 और निम्नलिखित; समानांतर विवरण: प्रकाशितवाक्य 3:10; प्रकाशितवाक्य 6:9-11; प्रकाशितवाक्य 9:11-21; प्रकाशितवाक्य 11:7-10; प्रकाशितवाक्य 13:7-8; प्रकाशितवाक्य 16:12-16; प्रकाशितवाक्य 16:17-20; प्रकाशितवाक्य 17:9ब-18; प्रकाशितवाक्य 18:1-24; प्रकाशितवाक्य 19:11-21 और प्रकाशितवाक्य 20:7-10)।

---

[16] www.last-biblebook.org के अंतर्गत "युगों से सम्बंधित ईश्वरीय ज्ञान व वाचा सम्बंधित ईश्वरीय ज्ञान" (परिशिष्ट)– प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पर एक विस्तृत टीका।

[17] प्रकाशितवाक्य 20 से तुलना करें www.Deltacourse.org ।

- **सभी मृतकों का एकमात्र पुनरुत्थान** (यूहन्ना 5:28-29; प्रेरितों 24:15 और निम्नलिखित समानांतर विवरण: 1कुरिन्थियों 15:35-57; 2कुरिन्थियों 5:1-9; फिलिप्पियों 3:20-21; 1थिस्सलुनीकियों 4:14-16; 1यूहन्ना 3:2-3; प्रकाशितवाक्य 11:11-12; प्रकाशितवाक्य 20:12अ-13-14)।
- **मसीहियों का बादलों पर उठाया जाना** (मत्ती 24:29-31, 40-41; 1थिस्सलुनीकियों 4:13-17; 1थिस्सलुनीकियों 5:1-2; 2थिस्सलुनीकियों 1:10)।
- **हवा में सभी लोगों का एकमात्र अंतिम न्याय** (मत्ती 25:31-32; 2 कुरिन्थियों 5:10; 2 थिस्सलुनीकियों 1:5-9 और निम्नलिखित समानांतर विवरण: प्रकाशितवाक्य 11:18; प्रकाशितवाक्य 14:6,14-20; प्रकाशितवाक्य 20:11अ, 12ब)।
- **सभी चीजों का नवीकरण** (ताकि नया स्वर्ग और नई पृथ्वी अस्तित्व में आ जाए) (मत्ती 24:35; प्रेरितों 3:21; 2 पतरस 3:10-13; प्रकाशितवाक्य 20:11ब; प्रकाशितवाक्य 21:1-22:6)।

प्रतीकात्मक 1000 वर्ष की अवधि महान विपत्ति को नहीं दर्शाती है जिसका उल्लेख मत्ती 24:21-25 में किया गया है, लेकिन मसीह के दूसरे आगमन पर महान विपत्ति के साथ समाप्त होती है (मत्ती 24:26-31)।

इस प्रकार, "1000 वर्ष एक प्रतीकात्मक संख्या है जो मसीही काल या नए नियम की अवधि का प्रतिनिधित्व करती है, जो यीशु मसीह के प्रथम और द्वितीय आगमन के बीच की अवधि है!" प्रकाशितवाक्य की पुस्तक मसीह के दूसरे आगमन के बाद एक शाब्दिक सहस्त्राब्दि राज्य[18] नहीं सिखाती है, बल्कि एक उद्घाटन किया हुआ, साकार या वर्तमान सहस्त्राब्दि है जिसमें हम अब जीवित हैं!

एक दूसरा आगमन।

2 थिस्सलुनीकियों 1: 8-9 के अनुसार, केवल एक और अंतिम न्याय का दिन यीशु मसीह के एक और केवल दूसरे "आगमन" पर होगा (ग्रीक: अर्चामे 2 थिस्सलुनीकियों 1:10 में और यूनानी - पारसिया 2 थिस्सलुनीकियों 2:1 में) या यीशु मसीह का "प्रगटीकरण" (यूनानी: अपोकलोप्सिस 2 थिस्सलुनीकियों 1:7)। मत्ती 24:39-41 "आगमन" (ग्रीक: परिउसिआ) की बात करता है जबकि लूका 17:30-35 "प्रकटीकरण" की बात करता है (ग्रीक: अपोकलुटोमै)। इसलिए, मसीह के "आगमन" और "प्रकटीकरण" में कोई अंतर नहीं है! हो सकता है कि इन शब्दों का इस्तेमाल दो अलग-अलग दूसरे आगमन को पेश करने में न किया जाए। विश्वासियों (मसीहियों) को प्रभु से मिलने के लिए हवा में बादलों में 'उठा लिया जायगा" (ग्रीक: harpazó) (भविष्य, निष्क्रिय)(1थिस्सलुनीकियों 4:17) ठीक उसी तरह जैसे यीशु मसीह अपने अधिरोहण में परमेश्वर के द्वारा उनके राज्य में "उठा 'लिए गए थे। (ग्रीक: हरपाजो) (अनाधिकारी, निष्क्रिय) (प्रकाशितवाक्य 12:5)। मसीही जन यीशु मसीह का स्वागत करेंगे, उस पर अचंभा करेंगे और उसकी महिमा करेंगे (2 थिस्सलुनीकियों 1:10)।
बाइबल मसीह की दो दुसरे आगमन को नहीं सिखाती है, लेकिन केवल एक दूसरा आगमन है (प्रेरितों 1:11 और मसीह के सभी दृष्टांत)!

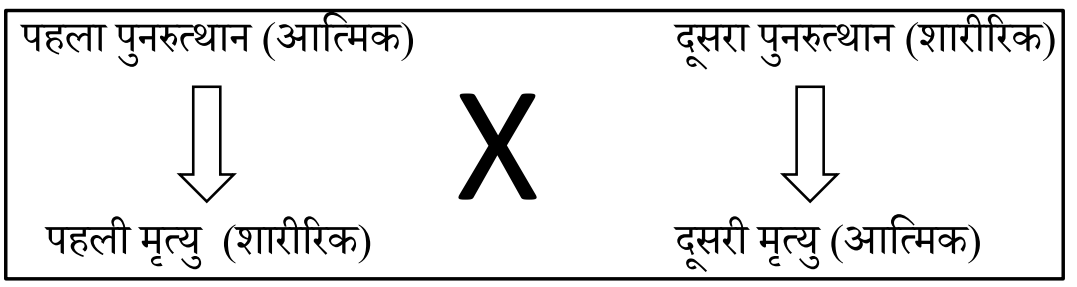
शरीर का एक पुनरुत्थान।

बाइबल मरे हुओं में से दो पुनरुत्थान नहीं सिखाती है, लेकिन मसीह के दूसरे आगमन पर मृतकों में से केवल एक पुनरुत्थान

[18] "राज्य " शब्द का इस्तेमाल प्रकाशितवाक्य 20:1-7 में भी नहीं किया गया है!

है (यूहन्ना 5:28-29; प्रेरितों 24:15)

प्रकाशितवाक्य 20: 4-6 भाषण का एक चित्र (एक व्यतिक्रम)[19] है!)



- **पहली मृत्यु** (निहित) मसीहियों के साथ-साथ गैर- मसीहियों के शरीर की मृत्यु को भी बताती है।
- **पहला पुनरुत्थान** एक शाब्दिक घटना के लिए एक आलंकारिक अभिव्यक्ति है, अर्थात्, शरीर का पुनरुत्थान नहीं, *बल्कि केवल (केवल आत्मा) मसीहियों की आत्मा (आत्मा) का पुनरुत्थान (ग्रीक: पुस्चे)* (प्रकाशितवाक्य 20:4। 1000 वर्षों की प्रतीकात्मक अवधि के दौरान, जब मसीही मर जाते हैं, *"वे एक बार और हमेशा के लिए जीवित रहते हैं"* (मसीह की उपस्थिति में) (ग्रीक: ईज़ीज़ेन <zó) (NIV "वे जीवन में आए थे" काफी हद तक शारीरिक पुनरुत्थान का सुझाव देता है)। यह स्वर्ग के आत्मिक वास्तविकता में अद्वितीय आत्मिक पुनरुत्थान / रूपांतरण को बताता है, उनकी शारीरिक मृत्यु के बाद स्वर्गीय महिमा में उनके आत्मिक जीवन का संदर्भ है (सभोपदेशक 12:7; देखें लूका 16:22; लूका 23:43; 2 कुरिन्थियों 5:1,8; फिलिप्पियों 1:23; कुलुस्सियों 3:3-4; 1 थिस्सलुनीकियों 4:14; 1 थिस्सलुनीकियों 5:10; प्रकाशितवाक्य 14:13; प्रकाशितवाक्य 20:4)। इसे *"पहला पुनरुत्थान"* कहा जाता है। यह शारीरिक पुनरुत्थान नहीं है, बल्कि आत्मिक पुनरुत्थान है।

गैर-मसीहियों की आत्माएं *"जीवित नहीं थीं"* (मसीह की उपस्थिति में नहीं आई) (एनआईवी: "वे जीवन में नहीं आए") जब तक कि 1000 साल समाप्त नहीं हो गए "(ग्रीक: ओक एजेसन अच्री टेलेस्टी टा चिलिअ एते)। वे स्वर्ग में स्थानांतरित नहीं होते हैं, लेकिन दूसरे आगमन तक नरक में रहते हैं, जब वे अंतिम न्याय में मसीह के सामने खड़े होंगे (देखें मरकुस 8:34-38; मरकुस 9:43-48; लूका 16:23; 2पतरस 2:9; प्रकाशितवाक्य 20: 5 एन मत्ती 25: 31-33)।

निम्न में "लाइव" शब्द (ग्रीक: ज़ाओ) का एक ही अर्थ है:

- लूका 20:37-38। मसीह के पहले आगमन से पहले जीओ। अब्राहम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर (भौतिक) मृतकों के परमेश्वर नहीं हैं (ग्रीक: नेक्रोन), लेकिन (आत्मिक रूप से) जीवित है (ग्रीक: जोनटों <ज़ाओ) (पूर्ण भूतकाल, सक्रिय) ।परमेश्वर के सन्दर्भ में, पितर "जीवित" हैं (ग्रीक: जोसिन <ज़ाओ) (वर्तमान काल)।
- यूहन्ना 11:25। मसीह के प्रथम आगमन के बाद जीओ। भले ही वह एक बार मर जाए (शारीरिक रूप से) (नोरिस्ट), वह (उसकी आत्मा) निश्चित रूप से "जीवित" रहेगा (ग्रीक: जोसेतै <ज़ाओ) (भविष्य काल)।

- 1 थिस्सलुनीकियों 5:10। मसीह के दूसरे आगमन के बाद जियो। मसीह हमारे लिए मर गया ताकि हम चाहे (हमारे शरीर) जाग रहे हैं (हम अभी भी जीवित हैं) या सो रहे हैं (मृत्यु में) (ग्रीक: कठऊदो), हम (हमारी आत्माएं) मसीह में (स्वर्ग में) एक साथ (ग्रीक: हमा सन) "जीवित" हैं (ग्रीक: जोसोमें "ज़ाओ) (आयरिस्ट)।

- **दूसरा पुनरुत्थान** (निहित) मसीह के *दूसरे आगमन पर मसीही और गैर-मसीही दोनों के शरीर के पुनरुत्थान (केवल) को संदर्भित करता* है।

[19] केइसमस अर्थात वाक्य परिवर्तन। दूसरा वाक्य पहले वाक्य का उलट क्रम है।

- **दूसरी मृत्यु** *केवल <u>गैर-मसीही की (केवल) शाश्वत मृत्यु को संदर्भित करती है।</u>* यह एक शाब्दिक घटना के लिए एक आलंकारिक अभिव्यक्ति है, अर्थात्, शरीर की मृत्यु नहीं (क्योंकि यह पहले से ही पहली मृत्यु के साथ हो गयी थी), लेकिन अनंत मृत्यु, अर्थात् अवज्ञाकारी (अपवित्र और अधर्मी) लोगों की जब वे अंतिम न्याय पर नरक में फेंक दिए जाते हैं (मत्ती 10:28; प्रकाशितवाक्य 21:8)

प्रकाशितवाक्य 20:4-6 में यूहन्ना 5: 24-29 के सुसमाचार के इस आंकड़े की तुलना करें, जो "आत्मिक पुनरुत्थान" (पुनर्जनन पर) और "शरीर के पुनरुत्थान" की बात करता है (दूसरे आगमन पर)! मसीह में सभी विश्वासियों का आत्मिक पुनरुत्थान मसीह के पहले आगमन से लेकर आज तक होता है। उनकी मृत आत्माएं (आत्माएं) (इफिसियों 2:1) जीवित हो जाती हैं (इफिसियों 2:4), अर्थात्, फिर से जन्म लेते हैं (यूहन्ना 3: 3-8)। लेकिन यूहन्ना 5: 28-29 मसीह के दूसरे आगमन और अंतिम न्याय पर शरीर के पुनरुत्थान के बारे में बोलता है। आत्मिक पुनरुत्थान और शारीरिक पुनरुत्थान दोनों ही शाब्दिक और वास्तविक घटनाएँ हैं!

उस दिन, अविश्वासी (गैर-मसीही) हमेशा के लिए विनाश में चले जाएंगे और प्रभु की उपस्थिति से बाहर निकल जाएंगे (2 थिस्सलुनीकियों 1:8-9; मत्ती 25:41)। लेकिन मसीह में विश्वासी मसीह का स्वागत करेंगे, उसकी महिमा और उसपर अचम्भा करेंगे (2 थिस्सलुनीकियों 1:10) और अपने अंतिम चरण में परमेश्वर के राज्य को विरासत में लेंगे (मत्ती 25:34)।

एक न्याय का दिन।

<u>बाइबल कई अलग-अलग अंतिम न्याय के दिनों को नहीं सिखाती है</u>, लेकिन दूसरे आगमन के तुरंत बाद केवल एक अंतिम न्याय के दिन और केवल एक दूसरे आगमन वाले दिन जब मृतकों में से पुनरुत्थान होगा (मत्ती 25:31-33; 2 पतरस 3); 3-13; प्रकाशितवाक्य 20:11-15)!

- **पुनरुत्थान ।** मत्ती में पद्यांशों के अनुसार, यीशु मसीह के दूसरे आगमन के दिन, मसीहियों के शरीर (जो कब्र में लेटे हुए हैं) पुनर्जीवित होते हैं और अपनी आत्माओं के साथ फिर से एकजुट होते हैं जो यीशु के साथ उसके दूसरे आगमन (1 थिस्सलुनीकियों 4: 14) में आए थे। दूसरी आगमन पर जो पृथ्वी पर अभी भी जीवित मसीही हैं वो पूरी तरह से बदल/ रूपांतरित किये जाएंगे (1 कुरिन्थियों 15:42-55)।
- **बादलों पर उठाया जाना।** तब सभी मसीही शरीर और आत्मा के साथ "<u>उठा लिए जायेंगे</u>" (प्रकाशितवाक्य 12: 5) या बादलों में "एक साथ किये जायेंगे "(ग्रीक: हरपाजो) (1 थिस्सलुनीकियों 4:17) या प्रभु यीशु मसीह से मिलने के लिए हवा में "ले लिए जायेंगे" (<u>स्वर्गदूतों के साथ</u>) (ग्रीक) : पैरालंबनोमई) (मत्ती 14; 31; 40 ए, 41 ए) (ग्रीक: ईइस एपेंटेसिन)।" यह तथाकथित "संतों या कलीसिया का उठाया जाना है", जो कि यीशु के दूसरे आगमन से 3½ या 7 साल पहले नहीं होगा, लेकिन ठीक मसीह के दूसरे आगमन के दिन में ही होगा! इन सभी मसीहियों को "भेड़" (मत्ती 25:33), "गेहूँ" (मत्ती 3:12), "अच्छा बीज", "राज्य के पुत्र", या "धर्मी" (मत्ती 13: 36-43) कहा जाता है)। वे प्रभु यीशु मसीह से मिलने, उनका स्वागत करने और उन पर अचंभा करने के लिए (2 थिस्सलुनीकियों 1:10; तुलना करें प्रेरितों 28:15) पर बादलों में उठाये जाएंगे।

  मत्ती 25:6 में लिखा है: "आधी रात को धूम मची: देखो, दूल्हा आ रहा है!" उससे भेंट करने के लिए चलो! " (ग्रीक: इदोउ हो नुम्फियस, एक्सेरचेष्टे इस अपनतेसिं औटो)। वचन 10 कहता है: "जब वे मोल लेने को जा रही थी तो दूल्हा आ पहुंचा, और जो तैयार थी, वे उसके साथ विवाह के घर में चले गयी और द्वार बन्द किया गया।"

शब्द: "एइस एपंटेसिन" यीशु मसीह के दूसरे आगमन को संदर्भित करता है जो अचानक और अप्रत्याशित रूप से और ऐसे लोगों से मिलेगा जो उससे मिलने के लिए आये हैं और दूसरों से जिन्होंने उससे मिलने में भाग नहीं लिया था (देखें मत्ती 24: 40-41) और शादी के भोज में भी हिस्सा नहीं लिया।

शब्द "ईस एपेंटेसिन" प्रेरितों 28:15 में उन विश्वासियों का उपयोग किया जाता है जो रोम से बाहर निकलकर पौलुस का स्वागत करने गए थे उसके रोम वापस आने से पहले।

शब्द "ईस एपेंटेसिन" 1 थिस्सलुनीकियों 4: 16-17 में विश्वासियों के लिए उपयोग किया जाता है जो "छीन लिए गए" (ग्रीक: हरपाजो) पुरानी पृथ्वी से यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर उनसे मिलने के लिए हवा में उसका स्वागत करने, उसकी महिमा करने के लिए ,और उस पर अचंभा करने के लिए, (2 थिस्सलुनीकियों 1:7-10) और इस अंतिम न्याय दिवस (मत्ती 25:31-33) पर न्याय करवाने के लिए, साथ ही साथ पुरानी पृथ्वी के न्याय के साथ (मत्ती 24:29-31); रोमियों 8:19-23; 2 पतरस 3:10-13; प्रकाशितवाक्य 6: 12-17; 16: 17-21; 20:11) इससे पहले की वे मसीह के साथ एक साथ उतरते हैं (नई यरूशलेम के रूप में) नई पृथ्वी पर (प्रकाशितवाक्य 21: 1-2) यीशु मसीह के साथ हमेशा के लिए रहने के लिए (1 थिस्सलुनीकियों 4:18; 5:10; प्रकाशितवाक्य 21: 3-5)!

- **गैर-मसीही**। गैर-मसीही पृथ्वी पर "पीछे छोड़े हुओं" में सबसे पहले हैं (मत्ती 24:40 बी, 41 बी)। मसीह के स्वागत में उनका कोई हिस्सा नहीं होगा। बाद में मसीह के दूसरे आगमन के उसी दिन, गैर-मसीही मसीह की न्याय के सिंहासन के सामने स्वर्गदूतों द्वारा लाये जायेंगे और उन्हें जलती हुई भट्टी (मत्ती 13: 40-42,48; 25: 32-33) में फेंक दिया जाएगा। गैर-मसीही को "बकरियां" (मत्ती 25:33), "गदहा" (मत्ती 3:12), "खरपतवार", "दुष्टों का पुत्र" या "बुराई करने वाले" कहा जाता है। मत्ती 13:36-43)।

बाइबल का सही नज़रिया यह है कि हर किसी के लिए केवल एक अंतिम न्याय का दिन होता है (तुलना में मत्ती 25: 46)!

(3) न्याय की कसौटी।

पढ़ें। लूका 10:20; प्रकाशितवाक्य 13:7-8; 20:11-15; 21: 8।

खोजें और चर्चा करें। फैसले की कसौटी क्या होगी?

ध्यान दें। प्रकाशितवाक्य 20:11-15 के अनुसार, एक और एकमात्र अंतिम न्याय के दिन (प्रकाशितवाक्य 20:12) पर, दुनिया के इतिहास में जितने लोग मारे गए हैं, "वे सभी मृत्यु (मृत्यु की अवस्था) और पाताल लोक (मृत शरीरों का स्थान, कब्र)", अर्थात्, वे सभी बिना किसी अपवाद के शारीरिक रूप से पुनर्जीवित हो जाएंगे (प्रकाशितवाक्य 20:13; तुलना करें यूहन्ना 5:28-29 ; प्रेरितों. 24:15)। यह "मृत्यु" और "पाताल" का अंत भी होगा, क्योंकि वे दोनों नरक में नष्ट हो जाएंगे (प्रकाशितवाक्य 20:14)।

सभी को, विश्वासियों और अविश्वासियों को, स्वर्ग में पुस्तकों और जीवन की पुस्तक के अनुसार आंका जाएगा (प्रकाशितवाक्य 20:20-15)। हर किसी को उसके द्वारा किए गए कार्यों के अनुसार आंका जाएगा, जिसमें छिपी हुई चीजें होंगी, चाहे वह अच्छी हों या बुरी (सभोपदेशक 12:14; रोमियों 2:6-11; 2कुरिन्थियों 5:10)। ये सभी बातें स्वर्ग की किताबों में दर्ज हैं। इस प्रकार, लोगों को निम्नलिखित के अनुसार आंका जाएगा:

- परमेश्वर के सामान्य प्रकाशितवाक्य के संबंध में उनके कार्य (सभोपदेशक 12:14; रोमियों 1:19- 20; रोमियों 2:5-12अ, 14-15)

- परमेश्वर के विशेष प्रकाशितवाक्य के संबंध में उनके कार्य (रोमियों 2:12ब-13; रोमियों 3:10-20)
- सुसमाचार के प्रचार के संबंध में उनके कार्य (रोमियों 3:21-31)।

सभी अविश्वासियों (जो लोग यीशु मसीह में विश्वास नहीं करते हैं) को आग की झील में फेंक दिया जाएगा, क्योंकि उनके नाम जीवन की पुस्तक में नहीं लिखे गए हैं (प्रकाशितवाक्य 20:15)। लेकिन सभी विश्वासी (जो लोग यीशु मसीह में विश्वास करते हैं) नए स्वर्ग और नई पृथ्वी को प्राप्त करेंगे, क्योंकि उनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखे गए हैं।

(4) भेड़ और बकरियाँ।

पढें। 1यूहन्ना 1:9-11; 3:4-10।

खोजें और चर्चा करें। भेड़ और बकरियां कौन हैं?

ध्यान दें। 1यूहन्ना 1:9-11 और 3:4-10 के अनुसार, "शैतान के बच्चे" और "परमेश्वर के बच्चे" के बीच एक स्पष्ट अंतर है। शैतान के बच्चों की विशेषता है कि वे परमेश्वर से पैदा नहीं होते (अर्थात फिर से जन्म नहीं लेते), वे जो सही है उसकी उपेक्षा करके पाप में जीना जारी रखते हैं और जो मसीहियों से प्रेम नहीं करते हैं। परमेश्वर के बच्चों को परमेश्वर में पैदा होने से, पाप में जीना जारी ना रखने से , जो सही है उसे करने और अपने मसीही भाइयों से प्रेम करने से पहचाने जाते हैं। यह पद्यांश बताता है कि "बकरियां" प्रतीकात्मक रूप से शैतान के बच्चों का प्रतिनिधित्व करती हैं और "भेड़ें" प्रतीकात्मक रूप से परमेश्वर के बच्चों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

हर कोई जो यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से परमेश्वर की संतान नहीं है, शैतान की सन्तान है। परमेश्वर की प्रत्येक सच्ची संतानें यीशु मसीह (यूहन्ना 8:42) को प्रेम करती हैं! लोग अब्राहम के शारीरिक वंशज होने का दावा कर सकते हैं, लेकिन जब वह यीशु पर या जो यीशु सिखाते हैं उसपर विश्वास नहीं करते हैं अभी भी शैतान की संतानें हैं (यूहन्ना 8: 39-47)। "यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूँ तो अपने पापों से मरोगे - अर्थात: तुम नरक में चलें जाओगे" (यही है, कि यीशु मसीह "" मैं जो हूँ सो हूँ " (यहोवा या बेहतर याहेवे) निर्गमन 3: 14-15 । (यूहन्ना 8: 24)। इसके अलावा भी यशायाह 40: 3 से तुलना करें, मरकुस 1:3 के साथ!

(5) यीशु मसीह के भाई।

पढ़ें। मत्ती 12:50; 28:10; मरकुस 3:35; यूहन्ना 20:17; रोमियों 8:29; इब्रानियों 2:11-13,17; याकूब 2:15-17; 1यूहन्ना 3:16-18; मत्ती 10:14-16, 40-42।

खोजें और चर्चा करें। यीशु मसीह के "भाई" कौन हैं?

ध्यान दें।

यीशु के इन भाइयों में से सबसे छोटा। मत्ती 12:50 और मरकुस 3:35 के अनुसार, यीशु "यहूदियों" को अपने भाई नहीं कहता, लेकिन वह हर किसी को जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार करता है "उसको भाई, बहन और माता-पिता" कहता है। मत्ती 28:10 और यूहन्ना 20:17 सिखाते हैं कि यीशु अपने ही शिष्यों को "भाइयों" कहते हैं। रोमियों 8:29-34 के अनुसार, वे सभी लोग जो परमेश्वर द्वारा चुने गए हैं और इसलिए उन्हें परमेश्वर द्वारा पुकारा गया, न्यायसंगत और महिमान्वित किया गया है, उन्हें यीशु का "भाई" कहा जाता है। और इब्रानियों 2:11-13 ,17, के अनुसार, वे सभी लोग जिन्हें पवित्र बनाया गया है, अर्थात्, परमेश्वर के बच्चे हुए हैं, यीशु के "भाई" हैं। वे अब उसके परिवार के हैं!

इस प्रकार मत्ती 25:40 के अनुसार, "यीशु मसीह के भाई" वे सभी लोग हैं जिन्होंने स्वयं को मसीह के सामने आत्मसमर्पण कर दिया है और उनके साथ एक आत्मिक संबंध और संगति में खड़े हैं। केवल वे ही वास्तविक मसीही हैं। वे ऐसे लोग हैं जो अपनी जाति, राष्ट्रीयता, सामाजिक स्थिति आदि की परवाह किए बिना विश्वास के माध्यम से अनुग्रह से बच जाते हैं, अविश्वासी यहूदी और अन्य सभी अविश्वासी निश्चित रूप से यीशु के भाई नहीं हैं!

अविश्वासी यहूदियों और पृथ्वी पर अन्य अविश्वासी यीशु के भाई नहीं हैं! वे "परमेश्वर के लोग" (इस्राएल) भी नहीं हैं और बाइबल का परमेश्वर उनका परमेश्वर नहीं है "(होशे 1: 9)!

और "यीशु के ये काम से काम भाई" उन मसीहियों के लिए एक संदर्भ है जिन्हें मदद की ज़रूरत है, क्योंकि भूखे मसीही, अकेले मसीही, गरीब मसीही, बीमार मसीही, कैद किए गए मसीही और सताए गए मसीही हैं (तुलना करें) इब्रानियों 10:32-34; 13:3)। वे ज़रुरतमंद मसीही हैं। ज़रुरतमंद मसीहियों के इस प्रतीकात्मक वर्णन में प्रेरितों 6:1-2, याकूब 2:1-26 और 1 यूहन्ना 3: 16-20 में इसकी समानता है। मसीहियों की ज़िम्मेदारी है कि वे ज़रूरतमंद मसीहियों की मदद करके अपना वास्तविक विश्वास और प्रेम प्रदर्शित करें!

यीशु के छोटे लोग (ऐसे जिन्होंने पुरोहितों, धर्मियों, और शिष्यों को बाहर निकाल दिया)। और मत्ती 10:40-42 में इसका समानांतर है। संदर्भ मसीह के चेलों को प्रेरित के रूप में भेजने का बोलता है (जिसका अर्थ है: बाहर निकले गए) सुसमाचार का प्रचार करने के लिए। मत्ती 10: 14-16 के अनुसार, यदि कोई उनका स्वागत नहीं करेगा या उनके संदेश को नहीं सुनेगा, तो उन्हें अपने पैरों से धूल झाड़ना चाहिए और उन लोगों और उनके शहर को छोड़ देना चाहिए। अंतिम न्याय के दिन यह उस कस्बे की तुलना में परमेश्वरहीन और दुष्ट सदोम और गोमोरा के लिए अधिक सहनीय होगा। हालाँकि, जो एक प्रेरित का स्वागत करता है वह स्वयं मसीह को और उसके भेजने वाले, परमेश्वर पिता का स्वागत करता है!

जो कोई भी मसीही शिष्यों को उनकी वास्तविक क्षमता, अधिकृत प्रतिनिधि के रूप, में स्वीकार करता है वह स्वं मसीह को स्वीकार करता है। जब लोग इन मसीहियों को अपने पड़ोसी (गैर-मसीही, अन्य धर्मों के अनुयायियों) के संभावित विरोध और उत्पीड़न के बावजूद अपने नए नियम के संदेश के साथ प्राप्त करते हैं, तो वे स्वयं यीशु मसीह को प्राप्त करते हैं (मत्ती 10:40)। जो कोई भी (वास्तविक) पुरोहित को प्राप्त करता है (शब्द का अर्थ है: उपदेशक बाइबल के परमेश्वर द्वारा भेजा गया) क्योंकि वह एक पुरोहित है एक पुरोहित का पुरस्कार प्राप्त करेगा। जो कोई भी धर्मी व्यक्ति को प्राप्त करता है (मतलब: वह व्यक्ति जो विश्वास से उचित हो, एक मसीही) धर्मी पुरुष का प्रतिफल प्राप्त करेगा। जो भी इन *छोटे लोगों* में से एक को एक प्याला ठंडा पानी देता है (एक व्यक्ति, एक पुरोहित, एक धर्मी व्यक्ति, मसीह का एक शिष्य) क्योंकि वह एक शिष्य है (मसीह का) निश्चित रूप से अपना पुरुस्कार नहीं खोएगा (मत्ती 10:42)। दुनिया की नज़रों में, यह शिष्य निरर्थक या अज्ञात हो सकता है, लेकिन मसीह की नज़र में यह छोटा व्यक्ति जो मसीह में विश्वास करता है, "उनका अपना चेला" है। "जो कोई भी इस तरह के एक छोटे मसीही (जो मसीह को स्वीकार करता है और मसीह पर निर्भर है) की मदद करता है, निश्चित रूप से अपना पुरुस्कार नहीं खोएगा।

पुरुस्कार क्या है? बाइबल वादा करती है कि वह पहले से ही अब परमेश्वर की शांति का अनुभव करेगा (मत्ती 10:13)। "शांति" परमेश्वर की पूर्णता, आत्मिक समृद्धि और आशंकाओं, आंदोलनकारी जुनून और नैतिक संघर्ष से **उद्धार** है। बाइबल वादा करती है कि वह स्वयं मसीह द्वारा उनकी वापसी पर सार्वजनिक रूप से स्वीकार किया जाएगा (मत्ती 25:34-36)। और बाइबल उनके कार्यों (मत्ती 16:27; 1कुरिन्थियों 3:12-14) के अनुसार पुरस्कार का वादा करती है, जिसमें उन सभी

आशीषों का समावेश होता है जो अंतिम न्याय के दिन (मत्ती 10:42) पर मसीहियों को अनुग्रहपूर्वक प्रदान की जाती हैं।

---

6. दृष्टान्त के मुख्य उपदेशों को संक्षेप में प्रस्तुत करें।

चर्चा करें। मध्यस्थ मित्र के इस दृष्टांत का मुख्य उपदेश या संदेश क्या है? यीशु मसीह ने हमें क्या जानना या मानना सिखाया और उसने हमें क्या *करना* या *बनना* सिखाया है?

ध्यान दें।

(1) सभी लोगों को पता होना चाहिए कि परमेश्वर या यीशु मसीह कैसे हैं।

अपने दूसरे आगमन पर, यीशु मसीह उन सभी लोगों का न्याय करने के लिए आएगा जो कभी पृथ्वी पर रहते थे! कोई नहीं बचेगा! सभी को अपने जीवन का लेखा-जोखा यीशु मसीह को देना होगा!

(2) मसीहियों को पता होना चाहिए कि उन्हें क्या होना चाहिए।

प्रत्येक व्यक्ति जो कभी भी जीवित रहा है, वह मसीह के साथ अपने संबंधों और मसीह और मसीहियों के प्रति उसके आचरण के आधार पर आंका जाएगा, चाहे वह किसी भी मसीही के लिए कितना भी महत्वहीन क्यों न हो। उसके अनुसार यह अंदाजा लगाया जाएगा कि क्या उसके सांसारिक जीवन के दौरान उसने यीशु मसीह में अपने विश्वास का प्रमाण दिया है, अर्थात क्या उसने यीशु मसीह में एक सच्चे विश्वास का जीवन जिया है।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[प्रतिक्रियाएँ]*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

आज आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से ***छोटी-छोटी प्रार्थना*** करने के लिए समूह में ***बारियाँ लें।*** या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी करें** (2 मिनट)	***[निर्धारित कार्य]*** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह अगुवा। समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर "भेड़ें और बकरियों" का प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **मीका 5**, **हाग्गै 2**, **जकर्याह 14**, **मलाकी 3** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. स्मरण करना। (16) रोमियों 12:16, (17) रोमियों 12:17, (18) रोमियों 13:8, (19) रोमियों 13:14, (20) रोमियों 16:17। **रोमियों की पत्री से पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।**
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 16:1-27**। बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।

6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन सहिंता 5:3)
7. परमेश्वर के राज्य पर प्रचार करने के लिए अपनी नोटबुक का अद्यतन करें। शांत समय में अपने नोट्स, अपने स्मरण किए हुए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।